परिवार नियोजन

नेकीराम गुप्त

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
नई दिल्ली

परिवार नियोजन

(एक झलकी)

नेकीराम गुप्त

(भूतपूर्व उपशिक्षानिदेशक, दिल्ली प्रशासन)

प्रबन्ध सचिव, भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

१७ बी. इन्द्रप्रस्थ मार्ग, नई दिल्ली-१

प्रकाशक
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
१७-बी, इन्द्रप्रस्थ मार्ग,
नई दिल्ली-१

प्रथम संस्करण १९६८

शृंखला संख्या ८१

मूल्य : ८० पैसे

मुद्रक
आर० के० प्रिंटस,
८०-डी० कमला नगर,
दिल्ली-७

दो शब्द

देश में जितना अनाज अधिक पैदा होता है, उससे ज्यादा खाने वाले पैदा हो जाते हैं। जितने स्कूल खुलते हैं, उससे ज्यादा पढ़ने वाले जन्म लेते हैं और जितना कपड़ा बनता है, उससे ज्यादा कपड़े पहनने वाले खड़े हो जाते हैं। यही हाल जीवन के और दूसरे क्षेत्रों में भी है। जन्म संख्या को सीमित करने के लिए पूरी कोशिश हो रही है, फिर भी जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। स्पष्ट है कि जम्म-दर घटाना, परिवार नियोजन करना भारत की एक ज्वलन्त समस्या है ।

समाज-शिक्षा कार्य संचालन के सम्बन्ध में मुझे गाँव-गाँव बस्ती-बस्ती घूमना पड़ा है। सभी मतों के लोगों से भेंट करनी पड़ी है। जलसों में सभाओं में लोगों से बोलना पड़ा है, उनकी समस्याओं को समझना पड़ा है। परिवार नियोजन भी उन बहुत-सी विकट समस्याओं में से एक है, जिस पर मैंने समय-समय पर प्रकाश डाला है। लोगों को समझाया बुझाया है। मेरी बातों की जो प्रतिक्रिया उन पर हुई, जो-जो शंकाएँ उनके मन में उठीं, जो-जो सवाल उनके दिमाग में उभरे, और उनके जवाब में जो कुछ मैंने उन्हें बताया, उन्हीं सब बातों के आधार पर यह छोटी-सी पुस्तक लिखी गई है।

आशा है पाठक गण इसे पढ़ कर परिवार-नियोजन की समस्या को समझेंगे। और उसे हल करने में सहायक होंगे। यदि इस पुस्तक को पढ़ कर चन्द लोग भी इससे लाभ उठा पाएँ तो मैं इस प्रयास को सफल मानूँगा। इसी विचार से प्रस्तुत पुस्तक देश के नव-शिक्षित युवा, स्त्री-पुरुषों की जानकारी के लिए समर्पित है।

नेकीराम गुप्त

अन्तर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस,
८ सितम्बर, १९६८
दिल्ली-१

परिवार नियोजन

"'बच्चे पैदा मत करो, गोली खाओ, आपरेशन कराओ, हस्पताल जाओ,' कैसे कहूँगा मैं यह सब और मेरी सुनेगा भी कौन ? अच्छे प्रधान बने, और यह रामलाल भी तो···।" (लम्बी साँसें भर-भर चिन्तित जगतू प्रधान अकेले में बड़बड़ा रहे थे। उसी समय रामलाल ग्राम सेवक वहाँ आ पहुँचे। प्रधान को सिर पकड़े और बड़बड़ाते देख भौंचक्के से रह गये। बोले·····)

"क्या सोच रहे हो ? जगतू प्रधान ! किस फिकर में पड़े हो ? सिर क्यों पकड़ रक्खा है ? क्या सिर दर्द हो रहा है ?"

"सिर दर्द नहीं होगा तो क्या आराम होगा ?" (प्रधान जी ने कहना शुरू किया) "जब तक तुम ग्राम सेवक रहोगे और मैं ग्राम प्रधान, यह सिर दर्द ही होता रहेगा। तुम्हारे पास और है ही क्या, जो दोगे मुझे।"

"मेरे पास ! क्या मुझसे कोई गलती हो गई काका ? मैं तो आपको सारे गाँव का ही नहीं अपना भी सब से बड़ा मित्र समझता हूँ। मैंने कोई दर्द आपको दिया ? क्या कह रहे हो, जल्दी बताओ काका, बात क्या है, मैं सेवा के लिए क्या करूँ ?" (रामू भैया ने अचरज भरी आवाज में कहा)

"अरे रामू भैया, सेवा नहीं, अब रास्ता बताओ, रास्ता।" (जगतू प्रधान तेजी से बोले) "कल तुम्हीं तो

लाए थे ना उन परिवार नियोजन वालों को बुला कर। बड़ी डींग मारी थी उनके सामने यह कह कर कि यह जगतू प्रधान का गाँव है। यह गाँव बड़ा आदर्श है। प्रधान जी जैसा साथी मिलना कठिन है। गाँव वाले सारे इनके लिए और यह गाँव वालों के लिए तन, मन और धन सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार रहते हैं। गाँव में सफाई है। गलियाँ पक्की हैं। नालियाँ पक्की हैं। घरों में रोशनी है। गाँव में स्नान घर हैं। शौचालय हैं। स्कूल हैं। पुस्तकालय है। वाचनालय है। दवाखाना है। दाई घर है। व्यायामशाला है। चरागाह है। बच्चों का पार्क है। खेल का मैदान है। खाद के गड्ढे गाँव से दूर हैं। पंचायत घर पक्का है। उसी में सहयोगी समिति का दफ्तर है और बैंक है। पशुशाला है। सारे गाँव के पशु एक जगह रहते हैं। पूरी देख-भाल होती है और सहयोग से सब काम होता है। यहाँ रेडियो है, टेलीविजन है और सब लोग पढ़े-लिखे हैं। सब सुखी हैं। खाते-पीते हैं और प्रेम से रहते हैं। और यह सब जगतू प्रधान की मेहनत और समझदारी का फल है। पंचायत भाइयों की है और युवक दल और महिला मण्डल पंचायत के दो हाथ हैं। बड़ी शान से कह रहे थे ना, तुम। और परिवार नियोजन वालों ने कहा था, 'शाबाश प्रधान जी ! मुबारिक हो। बस हमें अपने प्रयोग के लिए ऐसा ही गाँव चाहिए। आपसे मिला कर रामलाल जी ने हमारी बड़ी मदद की है।' क्यों, याद है ना ?"

"याद है प्रधान जी सब याद है, परन्तु इसमें बुराई क्या हुई ? यह तो सच्ची बात है, कोई झूठ या शेखी की तो नहीं। इसमें गलत कौन सी बात है ?" (रामू

भइया ने कहा) "ना इसमें कोई सिर दर्द की बात है और ना फिकर की।"

"अरे तो आगे उन्होंने क्या कहा था, यह भी याद है, मेरे दादा ?" (प्रधान जी ने ज़रा तेजी से कहा)

"हाँ, याद है काका।" (रामू ने उत्तर दिया) "उन्होंने कहा था, 'इस गाँव वालों की भलाई के लिए अब उन्हें परिवार नियोजन की बात और समझाओ, दवाइयों का प्रयोग बताओ और हस्पताल जाकर सलाह लेकर आपरेशन कराने की बात बताओ।"

"हाँ, हाँ, गोली खाओ, हस्पताल जाओ, आपरेशन कराओ और बच्चों को गला घोट कर न मार दो ? कम हो जाएँगे। क्यों यही है ना ? अरे यह सिर दर्द नहीं तो और क्या । अरे किस से कहूँगा मैं यह बात और कौन मेरी सुनेगा ? क्या उनके घर में दाने नहीं हैं ? क्या वह किसी के घर माँगने गए हैं। क्या मुझे किसी के बच्चे बुरे लगते हैं ? क्या दुख देते हैं मुझे वो ? यह है न मेरी आबरू उतरवाने की बात। इससे बड़ा सिर दर्द और क्या होगा ? बोलो, क्या समझे ?" (जगतू प्रधान एक साँस में ही तेजी से कहते चले गये)

"समझ गया, प्रधान जी, समझ गया। तो यह था आप का सिर दर्द, बस। और यह मेरे कारण हो गया, प्रधान काका।" (हँसते-हँसते रामलाल ने कहा)

"तेरे कारण नहीं तो क्या मेरे कारण हो गया ? अजीब नौजवान हो तुम भी। मैं तो सोच में मर रहा हूँ और तुम हँस रहे हो। अभी कुछ और कसर रह गई है क्या ?" (जगतू प्रधान बोले)

"कसर, अरे प्रधान काका, अभी तो काम शुरू ही नहीं हुआ, अभी तो सारी कसर है। अभी तो सिर दर्द शुरू हुआ है। अब इसका कारण मालूम करना पड़ेगा। फिर उसका इलाज करना होगा। जभी तो सिर दर्द मिटेगा और आपको चैन मिलेगा। दवा-दारू के बिना भला कहीं रोग दूर हुआ है। फिकर करने और घबराने से तो रोग बढ़ता है, काका।" (रामलाल बोला)

"अरे वाह रे मेरे डॉक्टर! ग्राम सेवक होते-होते डॉक्टर भी बन गए और लगे बताने दवाई। अरे बच्चों का पैदा होना भी रोग हो गया, बीमारी हो गई। सिर दर्द हो गया। अरे भगवान् बनाए रक्खे इस फुलवाड़ी को। यह तो घर के दीपक हैं, दीपक। इनके बिना तो घर सुनसान है मेरे बीर। जिस घर के आँगन में बालक किलकारी न मारे, वो घर ही क्या? वहाँ जीवन की खुशी और गृहस्थी का सुख कहाँ?" (प्रधान जी बोले) " 'मेरे आँगन में आओ नन्द लाल, तोहे माखन दूँगी।' क्या बीमारी को भी कोई माखन देता है, कहो?"

"देखो काका।" (रामलाल ने कहना शुरू किया) "न तो इसमें कोई सिर दर्द की बात है और न डॉक्टर की और न ही मैं नन्द लाल को माखन देने से मना करता हूँ, परन्तु यह सब तो जभी होगा ना, जब लाल तो हो नन्द लाल, और घर में हो माखन। वर्ना..."

"वर्ना क्या होगा?" (जगतू प्रधान ने बीच में ही टोका)

"होगा क्या, सिर दर्द जिसकी चाहिए दवाई।" (रामलाल ने व्यंगपूर्ण हँसी में कहा और फिर कहता

चला गया) "देखो काका, बड़े लोगों ने कहा है,

बिना बिचारे जो करे वो पाछे पछताय ।
काम बिगाड़े आपनो जग में होत हँसाय ।।

यह तो आप जानते ही हैं और रोज मानते भी हैं । जब ही तो गाँव के विकास के सभी काम सारी ऊँच-नीच बिचार कर करते हैं । क्यों ठीक है ना ?"

"हाँ, यह तो ठीक है।" (जगतू प्रधान ने कहा)

"तो अब सोचो कि कोई लखपति है, और उसके घर में दस बच्चे हो गए, तो क्या होगा भला ?" (रामलाल ने कहा)

"होगा क्या । घर भर जाएगा, चहल-पहल होगी, मौज रहेगी ।" (जगतू प्रधान ने तुरन्त जवाब दिया)

"बस यही तो भूल है काका ।" (रामलाल निराशा-पूर्ण लहजे में बोला) "घर तो भर जाएगा, आँगन में रौनक भी हो जाएगी, परन्तु वह लखपति तो केवल दस हजार का ही पति रह गया ना । अब या तो वह अपनी कमाई बढ़ा कर दस लाख पति बने वरना रह गया केवल दस हजार का । अब इसी हिसाब से अपने आराम के सब जरूरी खर्चों को घटाकर पहले से दसवाँ करना होगा और दस बच्चों को पालने, खिलाने, पिलाने, पढ़ाने, लिखाने और शादी कराने और रोजगार दिलाने की फिकर सिवाय में । कभी कोई रोएगा, कभी लड़ेगा, कभी बीमार पड़ेगा, कभी फेल हो जाएगा, कभी बेरोजगार हो जाएगा । कभी छूचक, कभी भात, कभी जन्म, कभी मरण, इस सब चक्कर में भूल जाएँगे लखपति जी अपनी सारी छकड़ी और याद

रहेगी केवल नोन, तेल, लकड़ी। अब बताओ इस चक्कर में परेशान वह कभी दस लाख पति हो सकेगा ? कहो, कुछ समझ रहे हो काका।" (रामलाल ने कहा)

"आज काका को उल्टी पट्टी क्यों पढ़ा रहे हो, रामलाल भैया ? क्या समझा रहे हो इन्हें। सब सुन लिया है मैंने, क्यों हमें बहका रहे हो।" (चौधरायन बीच में ही बोल पड़ी) "बच्चे सब अपने भाग्य का लाते हैं। कौन किसके ऊपर बोझ बनता है। देने वाला भगवान् है, वही सब को देता है। बेकार की चिन्ता में क्यों डाल रहे हो चौधरी को ? बच्चे क्या कमाएँगे नहीं ? क्या वह धन नहीं पैदा करेंगे। सबके सब लूले-लंगड़े, लुँजे, पंगू हो जाएँगे क्या ? कमाने वाले जितने होंगे उतनी कमाई बढ़ेगी। फिर यह व्यर्थ का बुखार बिल्कुल बेकार है।"

"वाह काकी ! तुम भी बीच में आ गईं, यह तो बहुत ही अच्छा हुआ।" (रामलाल ने कहा) "आखिर यह बात तो मर्दों और औरतों दोनों ही के जानने की है। इसलिए तुमने जो बात कही, वो शंका भी दूर होनी ही चाहिए। अब तो सिर दर्द और बुखार दो-दो हो गए।"

"तो मैं ठीक कह रही हूँ ना ? अब तो छोड़ो चौधरी का पीछा।" (चौधरायन ने बड़े गर्व से कहा)

"तुम क्या ठीक कह रही हो, काकी, देखो तुम्हें अभी पता चल जाता है। मैं तुम्हारे सन्तू से ही पूछता हूँ। इसका उत्तर तो वो ही दे देगा।" (राम लाल ने कहा)

"सन्तू, अरे ओ सन्तू। देख तो तुझे रामलाल भैया बुला रहे हैं। जल्दी आ तो।" (चौधरायन ने सन्तू को बुलाया)

"अभी आया माँ। बस सवाल का जवाब लिखना बाकी है।" (सन्तू ने कहा) (सन्तू चौधरी का लड़का है। आठवीं कक्षा में पढ़ता है। थोड़ी देर में सन्तू आ गया तो माँ ने पूछा)

"क्या सवाल कर रहा था रे। जल्दी से नहीं आया गया ?"

"एक आदमी के छः बेटे थे माँ; उसके पास साठ बीघे जमीन थी। बेटों में झगड़ा रहता था। उसने बड़े बेटे को एक चौथाई दे दी और बाकी सब में बराबर बाँट दी। तो हर एक बेटे को कितनी जमीन मिली ? यह सवाल निकाल रहा था माँ।" (सन्तू ने उत्तर दिया)

"तुझे इससे क्या मतलब है रे। अपनी जमीन कोई किसी को दे।" (चौधरायन ने कहा) "और सबको बराबर जमीन क्यों नहीं दी उस बाप ने ?"

"मुझे तो सवाल निकालना है, माँ। किताब का सवाल है। कोई मैं जमीन थोड़े ही बाँट रहा हूँ। मैं तो सवाल का जवाब निकाल रहा हूँ। हो सकता है बड़े बेटे के भी एक बेटा हो गया होगा ! मुझे क्या पता ! यह तो सवाल है। हर बेटे को जमीन अलग-अलग मिल गई।" (सन्तू ने उत्तर दिया)

"कहो काकी, तुम्हें अपने सवाल का जवाब मिला कि नहीं। छः बेटों का बाप। कमाई बढ़ी या जमीन भी बँट गई और साठ की नौ ही रह गई। और अगली पीढ़ी में न जाने आधा-आधा बीघा ही रह जाएगी। कमाई करने लायक जब तक बनेंगे तब तक तो बोझ का पहाड़ बन जाएगा। तुम्हारा सन्तू ही अभी कितने दिन में

कमाने लायक बनेगा ?" (रामलाल ने कहा)

"रामलाल भैया बिलकुल ठीक कहते हैं, माँ। अभी तो मैं खर्च ही खर्च कर रहा हूँ। अभी तो कमाना आया ही नहीं, न जाने बारह वर्ष और लगेंगे। और इतने में तो मेरे और कई भाई-बहन हो जाएँगे। उनका खर्च चलाने के लिए कमाई तो बढ़ानी ही होगी।" (सन्तू ने भोलेपन से कहा)

(चौधरायन को सन्तू की बात पर लज्जा मिश्रित हँसी भी आई और क्रोध भी। धीरे से उसका कान पकड़ कर बोली) "अरे अभी से खर्चे की बात करता है ! चल यहाँ से, जा अपना सवाल निकाल।"

(सन्तू चला गया। चाची गम्भीर हो गई) "सन्तू ठीक कहता है, रामू भइया। जमीन बँट जाएगी तो कमाई तो उल्टी घट जाएगी और बच्चों को खाने को ही न मिला तो क्या होगा ?"

"कभी जमना पर जाती हो काकी ? गायों को चारा या भिखमंगों को चने या खाना दिया है या देते हुए कभी देखा है।" (रामलाल ने कहा)

"अरे भैया तू काकी को क्या समझता है रे। मैं कोई कंजूस मूँजी थोड़े ही हूँ। हर सोमवार को जमना जी जाती हूँ। गायों को चारा तो हर पूर्णमाशी को डालती हूँ और भिखारियों को भुने चने हर सोमवार को मैं खुद देती हूँ। दूसरे को देते देखने की क्या बात है। भगवान ने हमें दाने दिए हैं भैया। भगवान बनाए रक्खे तुम्हारे चौधरी को, इनके हाथ-पाँव चलते हैं तब तक हमें काहे

की कमी है। भगवान का दिया सब कुछ है।"
(चौधरायन ने बात न समझ कर उत्तर दिया)

"भगवान बनाए रक्खे आपके इस सेवा भाव को काकी, पर यह तो बताओ जब तुम चारा डालती हो तो क्या होता है और चने बाँटती हो तो क्या होता है?"
(रामू ने पूछा)

"होता क्या है, भैया, बस मत पूछो। एक बार तो मैं ही लड़ती हुई गायों के बीच में पिस गई होती। वो तो एक नौजवान ने मुझे जल्दी से खींच लिया और मेरे हाथ से पूली छीन कर फेंक दी। वर्ना तो मैं बस पिस गई थी और चौधरी तुम्हारे रंडवे हो जाते। हाय राम! अब भी जब वो दिन मेरे याद आ जाता है, तो मैं डर जाती हूँ। अरे कैसी टक्कर मारी थी बिजार ने?"
(चौधरायन ने लम्बी साँस भर कर कहा)

"और चनों के पीछे बच्चे और बड़े लड़ते नहीं क्या?" (रामलाल ने कहा)

"लड़ते ही नहीं भैया, चक्कू निकल जाते हैं, चक्कू। हरेक चाहता है सारा खाने का सामान उसे ही मिल जाए, और लड़ते-लड़ते टोलियाँ बना लेते हैं, टोलियाँ। दूर-दूर से भागते हैं अपने साथियों की मदद करने। क्या करें बिचारे; भैया! भूख तो सभी को लगती है ना, इस पेट के लिए न जाने क्या क्या करना पड़ता है।"
(चौधरायन बोली)

(चौधरी अभी तक चुपचाप बड़े ध्यान से सब सुन रहे थे। जगतू प्रधान सब कुछ जानते थे। पर सोचा कभी नहीं था। आखिर वह गाँव के प्रधान थे, बड़े जमीं-

दार थे। अच्छे खाते-पीते थे। और गाँव भी शहर के नजदीक ही सड़क के किनारे था। आधा शहर था। उन्हें किसी बात की कमी तो कभी रही नहीं। एकदम जगतू प्रधान बोल पड़े) "यह शहर की बात है रामू। गाँव की आबादी तो वैसे भी बहुत अधिक नहीं होती। छोटी जगह होती है। थोड़े आदमी होते हैं। एक दूसरे की अमीरी-गरीबी का ज्यादा पता नहीं लगता। सभी लोग कुछ न कुछ धन्धा कर लेते हैं। सब कुछ न कुछ कमा लेते हैं, कोई थोड़ा कोई ज्यादा, खाने को अचार-रोटी मिली तो भी ठीक, साग-दाल और मिल गया तो भी ठीक। सादे कपड़े और साधारण रहन-सहन। ऐसे ही निभ जाती है गाँव में तो। कुन्बा बड़ा हो जाए, तो भी जो कुछ है उसे ही बाँट खाते हैं। ना ज्यादा मिले तो न सही। शहर की बात शहर की है उससे हमारा गाँव वालों का क्या मेल ?"

"शहर का हो चाहे गाँव का हो, आखिर भूख तो सभी को लगती है, सन्तू के बापू ! खाना तो सब को ही चाहिए। इसमें शहर और गाँव के मेल-बेमेल की कौन सी बात है।" (चौधरायन ने कहा) "गाँव वाले क्या आदमी नहीं होते। वो सब कुछ शहर वालों के लिए ही पैदा करेंगे क्या ? क्या दूध, साग, अनाज, सब शहर में ही भेज देंगे और अपने आप चटनी-अचार से ही पेट भरेंगे। अब तो सब का हक बराबर है। गाँव वाले किस बात में कम हैं ?"

"काकी ठीक ही कहती है। और काका, यह तो सोचो कि आखिर पशु या मनुष्य इन खाने-पीने की चीजों पर लड़ते क्यों हैं ?" (रामलाल ने कहा)

"इसमें सोचने की कौन सी बात है भई ? यह भी कोई बड़ा भारी मसला है। अरे खाना थोड़ा, चारा थोड़ा, और खाने वाले ज्यादा। भूख तो सबको लगती है। सब जल्दी से जल्दी अपना खाना या चारा पा लेना चाहते हैं। डर है कि पीछे बचेगा या नहीं और उन्हें मिलेगा या नहीं। इसीलिए टूट पड़ते हैं सब एकदम। इ लड़ाई कहो चाहे बेसब्री की छीना-झपटी। कारण एक ही है। खाना कम, खाने वाले अधिक।" (जगतू प्रधान ने तुरन्त उत्तर दिया)

"शाबाश, काका, शाबाश। यह हुई ना ग्राम प्रधान जैसी बात। यही तो मैं तुमसे कहलवाना चाहता था।" (रामलाल ने कहा) "अब यह समझो काका कि ये भीख माँगने वाले या ये पशु भी तो किन्हीं घरों के ही हैं। ये खाना माँगने के लिए इसीलिए घरों से निकले हैं कि इनके घरों में पूरा खाने को न रहा। घर में खाने वाले अधिक थे और खाना था कम। यही बात थी ना। क्यों ?"

"हाँ--भई बात तो यही थी। जब तक घर में खाने को मिलेगा तो माँग कर खाने के लिए कौन निकलेगा और जब तक घर में पशुओं को काफी चारा होगा तो उन्हें बाहर भटकने के लिए कौन छोड़ेगा। यह सब तो गरीबी, भूख और कमी में ही होता है।" (काका ने उत्तर दिया)

"ठीक है काका, तुम सब समझ रहे हो।" (रामलाल ने उत्तर दिया और कहता चला गया) "तो काका अब तुम अपने देश की बात सुनो। हमारे देश की भूमि सारे संसार की भूमि का सिर्फ चालीसवाँ भाग है और इस

पर सारे संसार की आबादी का सातवाँ भाग लोग बसते हैं। यानि दुनिया के हर सात लोगों में से एक भारतीय है। हमारे देश भारत में हर डेढ़ सैकिण्ड के बाद एक बच्चा पैदा होता है। हर रोज ५५०००, यानि हर साल २ करोड़ दस लाख बच्चे जनमते हैं।"

"अरे भई, तो बहुत सारे तो मरते भी होंगे। कोई सारे ही खाने को थोड़े ही रह जाते हैं।" (जगतू प्रधान ने बीच में ही बात काट कर कहा)

"सब्र करो, काका, सब्र करो। तुम्हारी बात ठीक है। मरते भी हैं, एक साल में केवल अस्सी लाख। घटा दो इनको, तो भी तो हर साल एक करोड़ तीस लाख बढ़ोतरी हो गई देश की आबादी में और दस साल में तेरह करोड़। आया कुछ समझ में।" (रामलाल ने कहा)

"तेरह···करोड़, दस साल में तेरह···करोड़, हर साल एक···करोड़ तीस लाख, हरे भगवान, तेरह··· करोड़।" (जगतू प्रधान ने चकित भाव से लम्बी साँस भर कर कहा) "अरे सुनती हो सन्तू की माँ, सुनती करोड़। हर साल एक···करोड़···तीस लाख।"

"सुन रही हूँ, सब सुन रही हूँ, सन्तू के बापू। एक··· करोड़···तीस···लाख हर साल। अरे इस हिसाब से तो खाना तो दूर रहा, खड़े होने को धरती भी न मिलेगी। रहेंगे तो यह आखिर धरती पर ही ना।···जभी तो मैं कहूँ थी सन्तू के बापू। यो धरती क्यूँ बिकती जा रही है। खेतों की जगह में मकान बन रहे हैं, मकान। यो तो औलाद न

हुई बाढ़ हो गई बाढ़।" (चौधरायन ने कहा)

"वाह, वाह, वाह, वाह। क्या बात कही है काकी ने, असली तस्वीर खींच दी, असली।" (रामलाल ने प्रसन्न मुद्रा में कहा)

"अरे काकी के भाई, तस्वीर तो असली खींच दी, पर इस बाढ़ का इलाज कोई आपरेशन ही है के, बस गोली का या लूप का ही इलाज रह गया के, कुछ और भी तो हो सकता होगा, कम नंगेपन का? पहले के आदमी यो ना समझें थे के। वे संयम तै रहें थे संयम तै, निरे जानवर ना बसें थे?" (जगतू प्रधान ने थोड़े रोष में कहा)

"शान्ति रक्खो, काका, शान्ति, जोश में मत आओ, धीरे-धीरे सब बात बताऊँगा। सुनते चलो, सर दर्द न मिट जाए तो कहना।" (रामलाल ने मधुर स्वर में कहा) "हमारी आबादी जो अब लगभग पचास करोड़ हो गई है, यह कोई दो चार दस साल में थोड़े ही हो गई है। इसमें तो हजारों बरस लगे हैं, हजारों। पर अब अगर आबादी इसी रफ्तार से बढ़ती रही तो पच्चीस वर्ष में ही सौ करोड़ हो जाएगी। असली मसला तो यह है, इसे समझो।"

"अच्छा, भाई, चल समझा, आबादी कैसे बढ़ी और कैसे १०० करोड़···ऐं···अरे १०० करोड़ का तो एक अरब हो जाएगा? कैसे हो जायगी? १०० करोड़··· समझूँ तो मैं भी।" (जगतू प्रधान ने कुछ गम्भीर हो कर कहा)

"देखो काका सन् १९२१ में हमारी जन्म दर तो हजार के पीछे ४९ थी और मरण दर ४८, रह गया हजार

के पीछे कुल एक। १६३१ में जन्म दर हो गई ४६ और मरण दर हो गई ३६, रह गए हजार के पीछे १०, १६४१ में जन्म दर हो गई ४५, और मरण दर हो गई ३१, रह गए हजार के पीछे १४, १६५१ में जन्म दर हो गई ४० और मरण दर रह गई २७, रह गए हजार के पीछे १३, १६६१ में जन्म दर हो गई ४२ और मरण दर २३, रह गए हजार के पीछे १६, १६६६ में जन्म दर हो गई ४१ और मरण दर १६, रह गए हजार के पीछे २५ और अगर हम ऐसे ही चले तो १६७१ में जब अगली जनगणना होगी तो मरण दर और भी घट जाएगी और हजार के पीछे बढ़ोतरी २५ से कहीं ३० तक पहुँच जाएगी। आबादी अगर ऐसे बढ़ी तो सोचो हम कहाँ पहुँचेंगे ? आया कुछ समझ में ?" (रामलाल ने कहा)

(जगतू प्रधान भौंचक्का-सा रह गया। चौधरायन भी चौंक कर बोलीं) "भई यो जन्म दर तो बढ़ रही है, पर मरण दर क्यों ना बढ़ती, यो घटती ही जा रही है। यो भी बढ़ जाए, तो आबादी न बढ़े।"

(रामलाल खूब हँसा और बोला) "वाह काकी, वाह, प्रधान जी तो कहते हैं कि मैं किस का गला घोंट दूँ और तुम कहती हो यो मरण दर क्यों ना बढ़ती। पहले दोनों समझौता तो कर लो आपस में।"

"अच्छा भाई, अच्छा, कर लिया समझौता, बता तू के बतावे है।" (जगतू प्रधान ने गम्भीर स्वर में जवाब दिया)

"असल में काका बात यह है कि पहले दिनों में अकाल, बाढ़, महामारी, भूकम्प, अग्निकांड और युद्ध खूब

होते थे और हजारों-लाखों आदमी मर जाते थे। हमारे पास उनको बचाने के साधन बहुत कम थे। अब सब रोगों का इलाज हो रहा है। अकाल, महामारी, बाढ़, और अन्य ऐसी ही आपत्तियों पर काबू पाने के साधन प्राप्त हैं। फिर मरण दर तो बढ़ने का काम है नहीं। अब तो जन्म दर ही घटानी पड़ेगी, तो ही गुजारा होगा। नहीं तो···" (रामलाल बोला)

"नहीं तो क्या होगा ? बताता क्यूँ नहीं ?" (जगतू प्रधान ने बात काटते हुए कहा)

"बता रहा हूँ काका, बता रहा हूँ, थोड़ा धीरज रक्खो। सब बताए देता हूँ। देखो १६५१ में हमारी आबादी थी छत्तीस करोड़ और पैदावार साढ़े पाँच करोड़ टन, १६६६ में हमारी आबादी तो हो गई पचास करोड़ परन्तु पैदावार सिर्फ पौने दो करोड़ टन बढ़ी यानि लगभग सवा सात करोड़ टन हुई। अब यह है ना भूखे मरने की बात। और भूखे ही क्यूँ, नंगे, अपढ़ और बेरोजगार भी हो जाएँगे। आखिर गरीबी तो सौ रोगों की जड़ है। १६५१ में हर आदमी को साढ़े छः छटाँक भोजन मिला और ६६ में रह गया छः छटाँक ही। यह तो भोजन की बात है। मसले और भी बहुत हैं। सिर्फ भोजन का ही नहीं।" (रामलाल ने कहा)

(जगतू प्रधान थोड़े चौंक कर बोले) "और कौन से मसले हैं भई, तुम तो यार डराए दे रहे हो ! यह सिर दर्द बढ़ाने की बात है या घटाने की ?"

"सिर दर्द का कारण समझा रहा हूँ, प्रधान जी समझ लोगे तो आप ही मिट जाएगा। चिन्ता ना करो,

बस सुनते समझते चलो। देखो तो सही रोग कितना भयंकर है। गरीब की जोरू, सबकी भाभी, यह मानते हो ना।" (रामलाल ने कहा)

"अच्छा भाई, तू और मसले भी बता। अगर सब का इलाज ना कर दूँ, तो मैं भी प्रधान नहीं। तू पेट भर के बता ले। हम ना गरीब की जोरू बनें ना सब की भाभी।" (प्रधान ने दृढ़ निश्चय के स्वर में उत्तर दिया)

"शाबाश! प्रधान काका, शाबाश! यह हुई ना हिम्मत की बात।" (रामलाल ने कहा और कहता चला गया) "देखो काका, एक साल में एक करोड़ तीस लाख की बढ़ोतरी थी ना आबादी में, याद है ना, यही बताया था ना।"

"हाँ, हाँ, याद है, आगे चल।" (जगतू प्रधान ने कहा)

(रामलाल आगे बढ़ा) "देखो, काका, इस एक लाख तीस करोड़ की···"

"अरे तू मेरी परीक्षा ले रहा है के? एक लाख तीस करोड़ नहीं, एक करोड़ तीस लाख? मेरे से भी जल्दी भूल गया तू तो।" (जगतू प्रधान ने बात काट कर कहा)

"अरे काका, यह तुम्हारा सिर दर्द तो मेरे आने लगा। अब तो मैं भूलने भी लगा। खैर तुम्हें ठीक याद है। (रामलाल ने थोड़ा संकोच दिखाते हुए कहा और कहता रहा) "तो एक करोड़ तीस लाख···हाँ ठीक है···एक करोड़ तीस लाख की बढ़ोतरी के लिए सवा करोड़ विवन्टल से भी अधिक तो भोजन चाहिए, उन्नीस करोड़ मीटर कपड़ा, पच्चीस लाख मकान, चालीस लाख नौकरियाँ, सवा लाख स्कूल और चार लाख पढ़ाने वाले

शिक्षक । क्या समझे ? कुछ फालतू बात तो नहीं कही ?"

"भई फालतू के यो तो कुछ कम ही दीखे है और सब ठीक ही है। आबादी बढ़ेगी तो सभी कुछ चाहिए। खाना, कपड़ा, और मकान तो पहली बात है और फेर पढ़ाई, धन्धा और कमाई, भई इतना तो चाहिए ही। पर भई यह परिवार नियोजन वाले भी 'बस दो या तीन बच्चे, लगते हैं घर में अच्छे,' यो कह रहे थे। तो आबादी तो, फेर भी बढ़ेगी ही। तू अब बता यो बात के है और करना के है ?" (जगतू प्रधान ने कुछ घबराहट-सी दिखाते हुए कहा)

"अब आए काका, रास्ते पर। अब बस सुनते चलो सब कुछ बता रहा हूँ।" (रामलाल ने प्रसन्न मुद्रा में कहा) "दो या तीन बच्चों की बात काका यह है कि आबादी में तो सभी रहने वाले गिने जाते हैं; परन्तु बच्चे तो जवान मर्दों बीरों के ही पैदा होते हैं ना। अपनी पैदावार और सब दूसरी बातों को देख कर यह अनुमान लगाया है कि अब जो एक हजार मर्द बीर के पीछे इकतालीस बच्चों का जन्म होता है, यो अगर पच्चीस रह जाए, तो हमारे मसले हल हो जाएँ। अगर एक मर्द बीर एक बच्चा पैदा करे तो यह बढ़ोतरी ४१ से ६ रह जाएगी, दो करे तो १७ और तीन करे तो २५। तो बस २५ तक रह जाए, तो ठीक। कम हो जाए, तो और भी अच्छा। इसलिए 'दो या तीन बच्चे, लगते हैं घर में अच्छे,' की बात समझ गए ना ? परिवार नियोजन वाले तो देश की सामर्थ्य को देख कर ही तो भले की बात कहते हैं। वो ना तो गला घोटने की बात कहते हैं और

ना ही जो बच्चे हैं उन्हें मार डालने की। उनका मतलब तो यही है कि भाई उतना बोझ बढ़ाओ, जितना आराम से उठा सको। उतने बच्चे पैदा करो जितनों को खूब खिला-पिला, लिखा-पढ़ा सको, ऐसा कि वो देश पर बोझ न बनें, बल्कि योग्य बन कर देश को आगे ले जा सकें। और···"

"हाँ भई, हमारे बड़ेरों ने जभी तो कहा है, उतने पैर पसारिये, जितनी लम्बी सौड़।" (चौधरायन बीच में ही बोल पड़ी)

"अरे भई सौड़ तो लम्बी न होगी, तो सर उघाड़ लेंगे, पैर तो पसारने ही पड़ेंगे और पैरों को सर्दी से भी बचाना पड़ेगा। सर्दी तो सिर को सहन करनी चाहिए। पर फेर भी बात तो तुमने मौके की कही।" (चौधरी ने कहा और फिर एकदम पूछने लगा), "क्यों भई आज की बातों में तुम बच्चों को भी भूल गई क्या? अभी तो दो ही हैं। सन्तू तो कभी का आ गया, आज वो गंगा बेटी कहाँ रह गई है? अभी तक स्कूल से नहीं आई।"

"ओ हो! मैं तो बिल्कुल बताना ही भूल गई। वो तो आज अपनी भूआ को साथ ले के आवेगी। मैंने कह दिया था, स्कूल से लौटते समय भूआ को साथ ले आवे। उस बेचारी का छः बच्चों का साथ है ना, अकेले आने में दुख माने है वो। बस अब तो आती ही होगी।" (चौधरायन बोली और तुरन्त ही बाहर चल दी जैसे गंगा बेटी और उसकी भूआ का स्वागत करने गई हो। चौधरी और रामलाल कुछ बात जारी रखना ही चाहते थे पर बच्चों के बड़े जोर से रोने की आवाज ने कुछ न करने

दिया। चौधरी बाहर जाने के लिए उठे ही थे कि गंगा सामने से आ गई, चौधरी बोले) "बेटी के बात है ? बड़ी देर लगाई आने में और ये बालक रो क्यों रहे हैं, सब ठीक तो है ना ?"

"हाँ बापू, अब तो सब ठीक है, बस एक चमेली के थोड़ी सी चोट लग गई है। सो वो रो रही है।" (घबराई हुई गंगा ने उत्तर दिया)

"चोट कैसे लग गई बेटी, के बात हुई। घनी चोट तो नहीं है, हस्पताल जाना पड़ेगा के ?" (प्रधान जी सटपटाए)

"नहीं बापू, ऐसी कोई बात नहीं। बस में भीड़ बहुत थी ना। गाँव की एक ही तो बस आती है। चढ़ने में धक्कम-धक्का रही, सो किसी तरह भूआ को और छहों बच्चों को धिका-धिक् कर बस में चढ़ा ही दिया। मैं तो सबसे पीछे चढ़ी थी। उतरते समय फिर वही खींचा-तान रही। मैं तो पीछे थी, भूआ ने जल्दी-जल्दी में चमेली का हाथ पकड़ कर खींच लिया और वो गिर पड़ी। बस में बड़ी बेसब्री होती है। मैं तो पीछे थी। दो बच्चे और मैं फिर भी रह गए और बस वाले ने बस चला दी। वो तो मैंने रस्सी खींच के घंटी बजाई और बस दुबारा रुकवाई, नहीं तो हम अगले अड्डे पर पहुँच जाते और फिर देर में वापिस आते और ये सब इतने खड़े-खड़े शायद रोते रहते। खैर, सब ठीक ही हो गया। भीड़-भड़क्के में तो यही होता है। जान बची लाखों पाए, समझ के बुद्धू घर को आए। बड़ी मुश्किल है बापू आजकल ज्यादा सवारियों का चलना। चाहे रेल हो, चाहे बस, सब लदी-

भरी चलती हैं। कुछ दिन हुए हमारी बड़ी बहन जी को तो हवाई जहाज में भी जगह नहीं मिली थी। कल गई हैं वो।" (गंगा बिना रुके कहती ही चली गई। अभी शायद और भी कहती परन्तु चौधरी बीच में बोल पड़े)

"अरी बेटी अब तू रुक तो सही, मैं जीजी और बच्चों से मिल तो लूँ। वो चमेली तो अभी रो ही रही है। कहीं ज्यादा लगगी के। भई रामलाल! जाइयो मत, मैं अभी आया। अभी तो हमारी बात बाकी है ना।"

"बहुत अच्छा प्रधान जो, मैं ठहर रहा हूँ। आप अन्दर बूआ जी से मिल आओ, बच्चों का हाल-चाल पूछ आओ।" (रामलाल ने कहा)

(जगतू प्रधान उठ कर चलने ही लगे थे कि चौधरायन जमना जोजो को और बच्चों का लेकर वहीं आ गई। चौधरी रुक गए। एकदम जमना जीजी से मिले और बोले)

"जमना। तू आ गई जीजी, सब ठीक है ना। यो चमेली क्यूँ रो रही थी? घनी लग गई के?" (फिर बच्चों से) "अरे आओ रे बालको, सब राजी हो ना। आओ, आओ, मेरे धोरे आओ। जमना! क्यूँ जीजी सब राजी-खुशी हैं ना।"

"सब राजी-खुशी हैं, भाई! बस मैं ही दुःखी हूँ; आज तो यो तेरी गंगा—आइयो बेटी, तेरी कमर तो कपथ दूँ—आज यो तेरी गंगा का और इस जमना का साथ ना होता तो या तो एक-दो बालक पिस जाता या भीड़ में छुट जाता, खोया जाता। भाई यो गंगा बेटी बड़ी हुशयार

है। मैं तो भीड़ के मारे घबरा गई। पर यो साथ थी तो काम चल गया···"

(जमना जीजी बोल ही रही थी—रामलाल बात काट कर ही बोल पड़े) "देखा जगतू काका, देख लिया पढ़े और बेपढ़े का फर्क। यो पढ़ाई-लिखाई की करामात है। आदमी में समझ हो, ज्ञान हो तो हिम्मत अपने आप आ जाती है। अनपढ़ आदमी मुसीबत में बेबस होकर रोता है और पढ़ा हुआ हिम्मत नहीं हारता, मुसीबत में रास्ता ढूँढता है···।"

"अरे भाई, अभी तो तू परिवार नियोजन की बात कर रहा था। अब यो दूसरा सिर दर्द और क्यूँ उठा लिया। राजी-खुशी सब घर पहुँच गए। बस ठीक है। पढ़ना, लिखना, सीखना तो अच्छा है ही। अनपढ़ आदमी तो पशु के बराबर होय है, पर जब पढ़ने की उमर ही निकल गई तो अब के बने है। अब बालकों ने पालेंगे या पढ़ेंगे और फिर अब उतनी पढ़ाई थोड़े ही करी जाय है। अब तो अगले जन्म में ही पढ़ना हो सकेगा, भाई···!"
(जगतू प्रधान कहने लगे)

(जमना बुआ बीच में बात काट कर ही बोल पड़ी) "भाई! यो भाई बात तो बिल्कुल ठीक कह रहा है। आज-कल अनपढ़ आदमी किसी काम का नहीं। ना खेत का, ना क्यार का, ना घर का, ना घाट का, ना कमाई का, ना भाईचारे का। अब तो पढ़े बिना काम नहीं चले। नई मशीन, नए औजार, नए रास्ते, नए ढंग, नया हुनर और नई दुनिया। इसीलिए तो अब बड़े लोगों को पढ़ाने का भी इन्तजाम किया गया है। घर के काम से निबट

कर मैं भी रोज पढ़ने जाऊँ हूँ। इन बालकों ने भी वहीं ले जाऊँ हूँ। दो तो स्कूल में जावें ही हैं। दो ने मैं साथ ले जाऊँ हूँ। बस दो छोटों की दिक्कत है, नहीं तो मैं भी आराम से पढ़ सकती हूँ।"

"अच्छा ! तो तू पढ़ने भी लगी। जरूर पढ़ जीजी, जरूर पढ़। दो बालकों की दिक्कत है तो इन ने यहीं छोड़ जा। तेरी भाभी देख लेगी। इसके तो दोनों बड़े हैं। फेर की फेर देखी जायगी। पर···" (जगतू प्रधान ने कहा)

(चौधरायन बीच में ही बात काट कर बोल पड़ी) "पर वर कुछ नहीं इसकी चिन्ता मत करो, ये रामलाल के भाई, 'बस दो या तीन बच्चे, लगते हैं घर में अच्छे,' वाले तो शहर में पहले ही पहुँच चुके हैं। अब हमारी जमना जीजी को फिकर नहीं है।"

"चलो, यह तो अच्छा हुआ। जमना पढ़ भी लेगी और··· (कुछ रुक कर) गंगा बेटी ! जा, अपनी बुआ के और बालकों के लिए खाने का काम जमा। हमारी बात अभी कुछ अधूरी थी, यो पूरी कर लें, बस हम भी आए और रामलाल भी खाना यहीं खाएगा।" (चौधरी ने कहा)

"अच्छा बापू।" (कहकर बूआ को और बच्चों को साथ लेकर गंगा चली गई। अब रामलाल, जगतू प्रधान और चौधरायन रह गए)

(जगतू प्रधान बोले) "रामलाल, भाई आज तेरी जीत हो गई। अब मैं सारी बात समझ गया। अब तू बेसक बुला लियो अपने परिवार नियोजन वालों ने। जो होगी सो देखी जावेगी।"

(रामलाल अपनी कामयाबी पर खुश था। हँसते-हँसते कहने लगा) "तो प्रधान जी, अब सिर दर्द मिट गया ना। बाकी तो नहीं अब।"

(जगतू प्रधान ने फिर एक लम्बी साँस भरी और बोला) "भाई, दर्द तो अब मिटा ही समझो पर···सन्तू की माँ, कुछ आया समझ में।"

(चौधरायन ने जवाब दिया) "समझ में कुछ के, सभी कुछ आ गया। जो बोले सो तेल को जाय, क्यूँ यही मतलब था ना ?"

(हँसते-हँसते चौधरी ने कहा) "तेल को जाय नहीं, जो बोले सो कुण्डा खोले। यो तो भाई घर में ही पहल करनी पड़ेगी।"

(रामलाल ने गौरवपूर्ण स्वर में कहा) "जय हो, जगतू प्रधान की जय हो, चौधरायन काकी की भी।" (फिर जगतू प्रधान से बोला) "जगतू प्रधान, अब तो तुम्हारा सिर दर्द मिट गया ना, और वो मैंने पैदा किया था ना। तो अब मैं कल से अपना तबादला करा लूँगा और आप अब आराम से सब काम करना। मैं अब खुश हूँ। क्यों, ठीक है ना ?"

(जगतू प्रधान ने लहजा बदला। थोड़े तेज स्वर में बोले) "ग्राम सेवक जी ! यो नहले पे दहला कहीं और चलाना ! मैं ऐसा-वैसा मरीज नहीं हूँ, मैं तो डाक्टर को भी साथ ले के मरूँगा। बस एक समझदारी की बात मान ली, तो सिर दर्द मिट गया। यो सिर दर्द कोई मामूली सिर दर्द है के। तने दो घंटे समझाते हो गये जब तो मेरी समझ में कुछ आया है और फिर भी अभी तो

वो मेरी संयम वाली बात तो बाकी ही है। मेरी तरियाँ ही सारे गाँव के साथ तने मगज मारना पड़ेगा। काम हो लेगा, जब कहीं जान दूँगा भाई। और तने के दुख है म्हारे गाँव में? तू क्यों संयम ने छोड़े दे है मेरे भाई?"

(रामलाल जरा चौंक कर बोले) "देखो काका, संयम में तेजी का काम नहीं। जरा शान्ति करो और देखो यह भी समझाता हूँ। ये तो आपने बड़ी सुन्दर बात कही थी। पर वो काकी वाली बाढ़ की बात याद है ना? देखो काका, मान लो गाँव को बाढ़ का खतरा हो गया, तो बचाव के लिए एकदम क्या करेंगे?"

"गाँव के चारों ओर ऊँचा बन्द बाँध देंगे और क्या करेंगे।" (प्रधान जी ने कहा)

(रामलाल जरा प्रसन्न मुद्रा में बोले) "बन्ध क्यों बाँधोगे, काका? बदरौ ना खोदोगे, जो हमेशा का झगड़ा ही मिट जाए। पानी इकट्ठा होगा, तो हमेशा ही दुख देगा। और फिर सबसे पहले तो जरा जोश खाओगे, सरकार को गालियाँ दोगे, बुराई निकालोगे और..."

"अरे भाई बदरौ कोई एक दिन में खुदे है के और बाढ़ कोई हमारे लिए ठहरेगी? खतरा हो गया तो फौरन बन्दोबस्त करना चाहिए। उसमें देर का क्या काम? बह न जाएगा सारा गाँव! बन्द पै तो सारे गाँव के लोग अपने घर का बचाव करने के लिए टूट पड़ेंगे। काम में जुट जाएँगे जुट, और एक दिन में ही बन्द तैयार।

बदरौ कोई इतनी जल्दी बने है। बुरी घड़ी टल जाएगी, बचाव हो जाएगा, बाढ़ उतर जायगी, तब सोच-समझ के बदरौ की बात चलेगी। और सरकार की या किसी की नुकताचीनी करने से या गाली देने से क्या फायदा ? इससे तो ना बदरौ बनेगी, ना बन्द। गाँव बह जाएगा। और फिर सरकार तो अब अपनी ही है, इसे गाली देना तो अपने को गाली देना है। काम हम ना करें और गाली सरकार को दें, ये तो बेकार की बात है।" (प्रधान जी ने बात काट कर हो जल्दी जल्दी बोलना शुरू किया)

(रामलाल हँसते रहे और प्रसन्न मुद्रा में बोले) "प्रधान काका, इस मामले में बिल्कुल ऐसी ही बात संयम की है। जन संख्या की बढ़ोतरी तो बिल्कुल बाढ़ का जैसा खतरा है और संयम का मामला बदरौ की तरह उसका पक्का बन्दोबस्त। पक्का बन्दोबस्त देर का काम है। हमारा देश बहुत बड़ा देश है। इसमें कोई साढ़े पाँच लाख से ज्यादा गाँव और तीन हजार से ऊपर बड़े-बड़े शहर और नगर, दो हजार मील की लम्बाई और इतनी ही चौड़ाई। पचास करोड़ के लगभग आबादी, जिनमें तीन चौथाई अनपढ़। चौदह भाषाएँ और दो सौ से ऊपर बोलियाँ, अलग-अलग रस्म-रिवाज और अनेक सामाजिक रूढ़ियाँ और सबसे बड़ा रोग गरीबी। हमारी फी आदमी सालाना आमदनी कुल सवा चार सौ रुपये है। वो भी अब रात-दिन मेहनत करने से हुई है। यह सब अड़चनें हैं काका संयम सीखने और अपनाने के रास्ते में। संयम का जान लेना ही काफी नहीं है, यह जीवन में धारण करने की बात है। तो इसमें तो बहुत समय चाहिए और इतने में तो आबादी हो जाएगी दूणी। इसी-

लिए यह बन्ध बाँधने वाली बात अपनाई गई है ताकि खतरा जल्दी टाला जा सके। थोड़ा सा काबू पाने पर शिक्षा बढ़ेगी, गरीबी भागेगी। पैदावार बढ़ेगी, आमदनी बढ़ेगी, सबको काम मिलेगा, बेरोजगारी चली जायगी। बेकार कोई न रहेगा तो संयम की बात अपने आप आती रहेगी। बहुत सारे रोग तो गरीबी, भूख, अज्ञान और बेकारी से ही पैदा होते हैं। ये बैरी मिटे तो सब काम ठीक हों। क्यों काका, कुछ समझ रहे हो ना। न रहेगा बाँस और न बजेगी बाँसुरी बल्कि यूँ कहो, 'मक्खी मच्छर दूर तो सेहत भरपूर।' कहो क्या समझे काका ?"

(प्रधान काका गंभीर स्वर में बोले) "हाँ भाई, सुना समझा तो सब है। तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो, पर मैं सोच रहा हूँ, यो गाड़ी पार कैसे लगे ? यो भी कोई···"

"सहज काम नहीं है। क्यूँ यही मतलब था ना काका ?" (रामलाल जी बात काट कर ही बोल पड़े)

(प्रधान काका बोले) "सो ठीक ही है, भाई, मतलब तो यही था। पर···"

(रामलाल ने फिर बात काटी) "पर क्या, काका ? बड़े लोगों ने कहा है :

बीती ताहि बिसार दे आगे की सुधि ले।
जो बनि आवे सहज में ताहि में चित दे॥

तो इसमें इतनी चिन्ता और सोच-विचार की क्या बात है। यह तो लोगों के समझने की बात है। उनके अपने फायदे की बात है। सब को समझाना है और मनाना

है। और फिर मैं आपकी सेवा में हूँ ही। इतने सोच-विचार की बात क्या है ?"

(प्रधान जी थोड़े गम्भीर होकर बोले) "भाई तुमने ही तो बताया था। 'बिना बिचारे जो करे, वो पाछे पछताय' और फिर अभी कहा 'जो बनि आवे सहज में ताहि में चित्त दे।' आखिर ये समझदारों की बातें हैं ना। अब मेरी समझ में यूँ करना चाहिए कि गाँव के जो बड़े-बड़े आदमी ऐसे हैं जिनके पाँच-पाँच छः-छः बालक हैं, उनकी मैं एक बैठक पाँच सात दिन में बुलाऊँ। पहले उन्हें मनावें। फिर तीन-तीन चार-चार वालों को और फिर बाकी को। यह सब मान जाएँ तो फिर···"

(रामलाल बात काट कर ही बोल पड़े) "प्रधान जी, सोचा तो तुमने ठीक ही है, पर यो पाँच सात दिन में तो फिर तीन पाँच ही होगी। यह मुझे मँजूर नहीं और ना ही यह ठीक है। तुरन्त दान, महा कल्याण। बड़े लोगों ने कहा है :

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होयगी, बहोरि करोगे कब ॥

पाँच-सात दिन तो दूर, भला कल भी किस ने देखी ? यह काम तो तुरन्त होना चाहिए।"

(प्रधान खड़े होते हुए बोले) "अच्छा भाई, अच्छा ! तू कहेगा जो होगा। पर तरकीब तो मेरी ठीक है ना। बस एक बार सब के कान में से निकाल लें और फिर बुला लेना अपने परिवार नियोजन वालों को। बस कामयाबी ही कामयाबी है। पहली बैठक आज शाम को ही ले। बस, अब तो राजी। चल, खाना तो खा ले या भूख

हड़ताल ही करवायेगा ?"

(रामलाल हँस पड़ा और बोला) "भूख हड़ताल क्यों। अब तो प्रसाद बाँटूँगा प्रसाद। पर एक बात कहे देता हूँ प्रधान काका···

ध्यान से जो सुनेगें।
लोग सारी मेरी बातें॥
कर लेगें वो उजाली।
काली काली अपनी रातें॥

पास उनके, खजाने होंगे।
चारा होगा दाने होंगे॥
रंगारंग के, खाने होंगे।
बच्चे उनके सयाने होंगे॥

सेहत होगी सफाई होगी।
पढ़ाई होगी, कमाई होगी॥"
जान उनकी न सस्ती होगी।
बस्ती उनकी, बस्ती होगी॥